ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 66 अंक 4 दिसम्बर 2018 पौष 2075 वार्षिक मूल्य 150 रु०

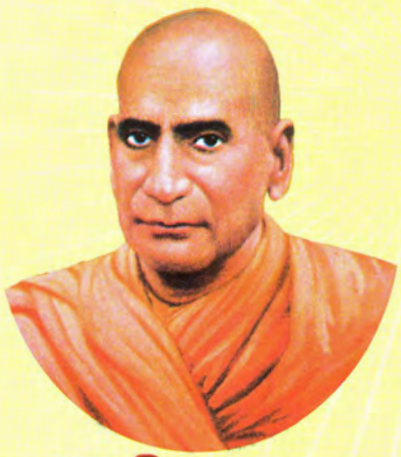

स्वामी श्रद्धानन्द

पं० रामप्रसाद बिस्मिल

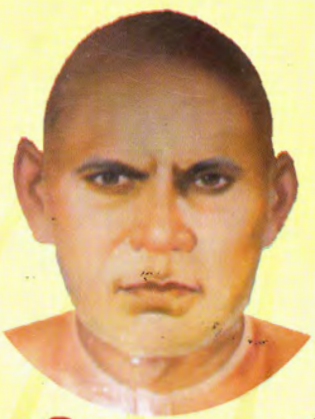

स्वामी आत्मानन्द जी

स्व० आचार्य वेदव्रत शास्त्री

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

आर्यवेदप्रचार यात्रा की चित्रावली

गांव अटायल में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

गांव किसरेटी में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

गांव खेड़ीसाध में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

गांव गढ़ी में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

गांव गांधरा में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

गांव पाकस्मा में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

वैदिक विनय

या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टा,
अभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्।
अन्यत्रास्मत् सवि तस्तामितो धाः,
हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः।।

अथर्व० 7.115.2।।

विनय

हे जगदीश्वर! मेरे पास जो ऐसी लक्ष्मी पड़ी हुई है जो कि 'अजुष्टा' है जो कि सेवित नहीं होती, जो कि किसी की प्रीतिमय सेवा में नहीं आती, वह किस काम की है? वह लक्ष्मी 'लक्ष्मी' नहीं है। वह लक्ष्मी दुराचार बढ़ाने का कारण होती है। 'अजुष्टा' लक्ष्मी पतन का भारी प्रलोभन होती है। ऐसा धन बुरे कार्यों में ही बरबाद हुवा करता है और मनुष्य को नीचे गिरा देता है। ऐसी लक्ष्मी को मैं मोह के मारे त्यागता (परहित में दे देता) भी नहीं हूं और उस सबका स्वयं उपयोग भी नहीं कर सकता हूं। इसलिये वह या तो बुरे काम में पतित हो जाती है या यूं ही सड़कर नष्ट हो जाती है। पर सबसे बुरी बात तो यह है कि यह मेरी ऐसी 'लक्ष्मी' मुझे चिमटी हुई हर तरह से मुझे ही बरबाद करती है, मेरे जीवन-रस को चूसती है। अतः, हे मेरे प्रेरक प्रभो! मुझमें ऐसी हिम्मत दो कि मैं उस लक्ष्मी की— इससे पहिले कि वह पतित होने लगे और मुझे विनष्ट करने में लगे— मैं उसे कहीं अन्यत्र धारित कर दूं— किसी अच्छे कार्य में लगा दूँ, उसे अपने पर लादे न रखूँ। हे सवितः! तुम ही उस दुर्लक्ष्मी को यहां से तो हटा दो। यह 'लक्ष्मी' नहीं है, किन्तु वह मेरे लिये विनाशक शापरूप है। वह मुझ पर मोह द्वारा चिमटी हुई केवल मेरे जीवन-रस को सुखा रही है जैसे वन्दना बेल जिस वृक्ष पर लगती है उस वृक्ष को बिल्कुल सुखा देती है, वैसे ही यह अजुष्टा लक्ष्मी मुझे घेरे हुवे है, मेरा विनाश कर डालने के लिये मुझे आच्छादित किये हुवे है। हे प्रभो! तुम मुझसे इसे छुड़ाओ। मेरे मोह का भंग करके इसे यहां से हटाने का मुझे सामर्थ्य दो, नहीं तो यह 'अजुष्टा' लक्ष्मी मुझे चूसकर खत्म कर रही है— मेरी उन्नति को रोक रही है, मेरे आत्म-तेज को हरती जा रही है।

हे प्रेरक! मेरी प्रार्थना है कि आगे से ऐसा धन तो मेरे पास आने ही न पावे। मुझे तुम बेशक थोड़ा सा धन देना। पर वह धन चमकता हुवा, तेजस्वी, निष्कलङ्क हो, हिरण्य हो, हितरमण हो। वह धन सर्वांश में उपयोगी हो, उसका एक एक अंश मेरे तेज, मेरे आत्मवीर्य को बढ़ानेवाला हो। तुम्हारे 'हिरण्यहस्त' से ही अब मैं धन चाहता हूँ। तेरे चमकते हुवे 'हिरण्यहस्त' से अब मुझे सदा ऐसा तेजस्वी धन मिलता रहे जिसका कि एक एक कण मेरे आत्म-तेज को बढ़ाने **में** व्यय हो तथा वह अन्यत्र भी जहां जाये वह मनुष्यों के तेज के बढ़ाने में ही उपयुक्त होवे।

शब्दार्थ

(**अजुष्टा**) असेविता, काम में न आने वाली (**पतयालूः**) अतएव दुराचार **में** गिरनेवाली, मुझे गिरानेवाली (**या**) जो (**लक्ष्मीः**) लक्ष्मी (**मा**) मुझे (**अभिचस्कन्द**) चिमटी हुई है (**वृक्षं वन्दना इव**) जैसे कि सुखा देनेवाली वन्दना बेल वृक्ष को चिपट जाती है (**तां**) उस ऐसी लक्ष्मी को (**सवितः**) हे प्रेरक परमेश्वर! (**अस्मत् इतः अन्यत्र**) तू हमसे, यहां से, जुदा (**धाः**) रख दे— कर दे (**हिरण्य-हस्तः**) हिरण्यहस्त से—तेजस्वी चमकते हाथ से तू (**नः**) हमें (**वसुः**) ऐश्वर्य (**रराणः**) देता हुवा हो।

सम्पादकीय

ओ३म्

श्रीरामचन्द्र जी लंका से अयोध्या कब लौटे ?

वाल्मीकीय रामायण जैसे प्रामाणिक ग्रन्थ का बुद्धिपूर्वक स्वाध्याय न करके आजकल कुछ व्यक्ति अनर्गल बातों का प्रचार कर रहे हैं। जैसे दशहरा के 21 दिन बाद दिवाली इसलिये मनाई जाती है कि श्रीराम लंका से पैदल चलकर 21 दिनों में अयोध्या पहुंचे थे। इसीलिये उनके पधारने की प्रसन्नता में दीपावली मनाई जाने लगी। ऐसी असत्य बातें फैलाने वाले यह बतायें कि उनकी इस बात का प्रमाण क्या है ? क्या 21 दिनों में इतनी लम्बी दूरी पैदल चलकर पूरी की जा सकती है ? क्या वे मार्ग में कहीं रुके नहीं और दिनरात लगातार चलते रहे ? कुछ खाया-पीया नहीं ? विश्राम भी नहीं किया ? लक्ष्मण और सीता जी भी इसी भांति पैदल चलकर थके भी नहीं होंगे ?

इस विषय में सचाई जानने के लिए रामायण का सहारा लेना चाहिये। जब श्रीरामचन्द्रजी वन में गये तो भरत ने उनसे कहा था कि—

चतुर्दशे हि सम्पूर्णे वर्षेऽहनि रघूत्तम।
न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यमि हुताशनम्।।

अयोध्याकाण्ड 112/25-26

हे राम! चौदह वर्ष पूर्ण करके अगले दिन यदि आपको मैं यहां अयोध्या में नहीं देखूंगा तो मैं स्वयं को अग्नि में जला लूंगा।

श्रीराम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना निश्चित हुआ था, सो चौदह वर्ष भी चैत्र में ही पूरे होने चाहियें। रामायण में लिखा है—

चैत्रः श्रीमानयं मास; पुण्यः पुष्पितकाननः।
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम्।।

अयोध्या० 3/4

पुष्पों से भरे बागों वाला यह पवित्र चैत्र मास राम के राज्याभिषेक के लिये निश्चित किया है। रावण द्वारा सीताहरण के पश्चात् श्रीराम ने सुग्रीव से कहा—

पूर्वोऽयं वार्षिको मासः श्रावणः सलिलागमः।
प्रवृत्ताः सौम्य चत्वारो मासा वार्षिक संज्ञिताः।।
कार्तिके समनुप्राप्ते त्वं रावणवधे यत।

किष्किन्धा० 26/14, 17।

यह श्रावण मास है, ये वर्षा के चार मास हैं, इनमें युद्ध करने का समय नहीं है अतः कार्तिक मास में रावण वध के लिये प्रयत्न करना।

वर्षाकाल बीत जाने पर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा—

वर्षाः समयकालं तु प्रतिज्ञाय हरीश्वरः।
व्यतीतांश्चतुरो मासान् विहरन् नावबुध्यते।।

वर्षा काल बीत जाने पर सुग्रीव ने सीता अन्वेषण का वचन दिया था परन्तु चार मास बीत जाने पर भी सुग्रीव अपने सुखोपभोग में रमण करता हुआ अपने वचन को भूल रहा है।

इस पर लक्ष्मण ने सुग्रीव को धमकाकर उसकी प्रतिज्ञा स्मरण कराई। सुग्रीव के मन्त्री हनुमान् ने तो वर्षा की समाप्ति पर ही सेना एकत्र करने का उद्योग प्रारम्भ कर दिया था। परन्तु लक्ष्मण द्वारा सुग्रीव को उपालम्भ देने पर सेना को आदेश दिया कि सीता की खोज शीघ्रता से की जाये। जब सुग्रीव की सेना समुद्रतट पर पहुंच गई तो श्रीराम ने सुग्रीव से कहा—

उत्तराफाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते।
अभिप्रयाम सुग्रीव सर्वानीकसमावृता:।।

युद्धकाण्ड 4/6

आज उत्तराफाल्गुनी है, कल हस्त नक्षत्र लग जायेगा, अत: सब सेना सहित हमें आज ही युद्ध के लिये प्रयाण कर देना चाहिये।

इससे पूर्व वर्षा के चार मास व्यतीत होकर कार्तिक से फाल्गुन के आधे तक का समय विभिन्न स्थानों से सेना एकत्र करने में लगा। तदनन्तर फाल्गुन में किसी समय युद्ध हुआ और युद्ध के पश्चात् रावण की अन्त्येष्टि, विभीषण का राज्यारोहण आदि कार्यों में कुछ समय लगा। तदनन्तर चौदहवर्ष पूर्ण होने पर श्रीराम महर्षि भरद्वाज के आश्रम में पधारे।

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पञ्चम्यां लक्ष्मणाग्रज:।
भरद्वाजजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्।।

युद्धकाण्ड 124.1।।

जब भरत श्रीराम से मिलकर अयोध्या को लौटे तो भरत ने कहा था—

चतुर्दशे हि सम्पूर्णे वर्षेऽहनि रघूत्तम।
न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामि हुताशनम्।।

अयोध्याकाण्ड 112.25-26।।

यदि चौदह वर्ष पूर्ण होने के बाद अगले दिन यदि आप अयोध्या नहीं आये तो मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगा।

इसी बात को स्मरण करके श्रीराम ने एक दिन पहले ही हनुमान् को भरत के पास भेजकर अपने आने की सूचना दी। हनुमान् ने भरत को बताया—

पुष्पकेण विमोनेन किष्किन्धामभ्युपागमत्।। 53।।
तां गंगां पुनरासाद्य वसन्तं मुनिसंनिधौ।।
अविघ्नं पुष्ययोगेन श्वो रामं द्रष्टुमर्हसि।। 54।।

युद्धकाण्ड 126 वांसर्ग।

श्रीराम पुष्पक विमान से किष्किन्धा पहुंच गये हैं और गंगा नदी को प्राप्त करके कल पुष्य नक्षत्र के योग में आप श्रीराम को देखलेंगे। इसी कथनानुसार श्रीराम चैत्र शुक्ला षष्ठी को अयोध्या पहुंच गये।

इस प्रकार सिद्ध है कि श्रीराम चैत्र मास में ही वन में गये और चौदह वर्ष पूरे होने पर चैत्रमास में ही वापिस अयोध्या में लौट आये। अत: कार्तिकमास में श्रीरामचन्द्र का अयोध्या लौटना सर्वथा असत्य और कल्पनाप्रसूत है। कार्तिक में श्रीराम का लौटना और उसी प्रसन्नता में दीपमाला मनाने का कोई सम्बन्ध नहीं है। वाल्मीकि रामायण में पढकर देखने से यह दीपावनी वाला भ्रम दूर हो जाता है।

विरजानन्द दैवकरणि
मो० - 9416055702

मेरे भाई 'बिस्मिल'

श्रीमती शास्त्री देवी (अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की बहिन)

मेरा जन्म सन् 1902 में हुआ था। भाई रामप्रसाद बिस्मिल के चार साल बाद मैं पैदा हुई थी। भाई जी मुझ पर बहुत स्नेह रखते थे। मेरे पिता के खानदान में लड़कियों को होते ही मार डालते थे। मेरे मारने के लिये बाबा और दादी ने मेरी माताजी को कहा, मगर माताजी ने नहीं मारा। भाई बहुत रोते थे कि बिटिया को मत मारो। मैं तीन महीने की हो गई थी, तब दादी ने माता जी से फिर ताना मार कर कहा कि क्या लड़का है, जो इसकी इतनी हिफाजत करती है। माताजी ने बाबा के यहां से अफीम मंगाकर मुझे पिला दी। पड़ोस में थानेदार का मकान था। उनकी पत्नी हमारे घर आती थीं। उन्होंने मेरी खराब हालत देखी और कहा कि इसे क्या दे दिया ? मैं दरोगाजी से कहूँगी। उन्होंने दरोगाजी से कह भी दिया। दरोगाजी ने दादी को बुलाकर कहा कि मैं सबको गिरफ्तार करा दूंगा। तुम लोगों ने कन्या की हत्या क्यों की ? तब बहुत से इलाज किए। तीसरे दिन मुझे होश आया। फिर माँ का दूध नहीं पिलाने दिया। कभी-कभी गाय का दूध छिपकर माताजी पिला देती थीं। तीन साल तक अफीम के नशे में रखा। मुझे बैठना तक नहीं आया। एक मुंसिफ साहब पड़ोस में रहते थे। उनके कोई बच्चा न था। मुंसिफ की पत्नी मेरे ही यहां से दूध मोल लेकर मुझे पिलाती रहीं। मैं चंगी होती गई। दो साल के बाद उनके भी बालक हुआ, मगर वे मेरी हिफाजत करती रहीं। कहने लगीं, इसी कन्या के भाग्य से मेरे पुत्र हुआ। उनकी बदली हुई, तो मुझे मांगा और कहा मैं ही शादी करूंगी, मगर घरवालों ने नहीं दिया। भाई ने रोना शुरू किया कि मैं अपनी बिटिया को नहीं दूँगा। भाई को स्त्री समाज से बहुत प्रेम हो गया। मुझे भी बराबर साथ-साथ सन्ध्या-हवन सिखाया। आप क्रान्तिकारियों के साथ चले जाते थे। मेरे से कह जाते थे किसी से कुछ न कहना। जो कह दिया तो जान से मार दूँगा। मैं डर से किसी से नहीं कहती थी। मैं लोअर मिडिल में जब पढ़ती थी, तब आपने रात को इश्तहार छपवाकर सरकारी जगहों पर अड़तालीस जिलों में लगवा दिए। पुलिस को पता चल गया कि रामप्रसाद ही सब में शामिल है। तब तक आप चार मित्र सलाह करके वायसराय को मारने कलकत्ते को रवाना हुए। बीच में इलाहाबाद ठहरे। गंगासिंह, राजाराम, देवनारायण और रामप्रसाद। इन चारों में बहुत झगड़ा हो गया। रामप्रसाद का कहना था कि एक वायसराय को मारने से स्वराज्य नहीं हो सकता। जिस तरह एक रात में इश्तहार लगा दिए, इसी तरह सारे हिन्दुस्तान के अंग्रेज खतम कर दिए जायें तो अच्छा हो। इन लोगों ने सलाह करके कहा कि पहले रामप्रसाद को ही खतम कर दो, यही काम नहीं चलने देगा। सब अंग्रेज किस तरह खतम हो सकते हैं। प्रातः काल त्रिवेणी के तट पर श्री रामप्रसाद जी सन्ध्या कर रहे थे कि.....ने तमंचा छोड़ दिया। पहली गोली न मालूम हुई, क्योंकि ध्यान प्राणायाम में

था। दूसरी गोली कान के नजदीक से होकर निकली। कुछ सनसनाहट मालूम होने पर आँख खोलकर देखा, तो सामने.....तमंचा ताने खड़े हैं। उठकर भागे। कपड़े अपना तमंचा वहीं छूट गया। जान बचाकर एक पंडित तिवारी जी के यहाँ पहुँचे। पंडित जी ने धीरज बँधाया, कहा कि क्या आफत आ गई; वे अपनी पहिचान के थे। कुछ देर ठहर कर गायब हो गए। तब तक ये सब तिवारी जी के यहाँ पहुँच गए। पूछा कि रामप्रसाद आए हैं। उन्होंने कह दिया कि यहाँ नहीं आये। इन लोगों ने बहुत ढूँढ़ा, मगर कहीं पता न मिला। ये लोग वापिस शहाजहांपुर आ गए। रामप्रसाद बंगाल की तरफ चले गए। इन लोगों ने समझा मारे गए। हमारे घरवालों ने सच मान लिया कि मर गए। उनका सब कारज भी कर दिया, फिर पिताजी बहुत घबराए कि लड़कियों की शादी भी करनी है। मैं अकेला कमाने वाला हूँ। उन्होंने मेरा पढ़ना बन्द कर दिया, अपने देश में आकर शादी का इन्तजाम किया। जिला आगरा में पिनाहट के पास एक मौजा है। उसमें मेरे पिता की ननसाल थी, उसी के पास मेरी भी ननसाल थी। वहीं से शादी का प्रबन्ध किया। भाई का कहना था कि खूब पढ़ाकर अच्छे घर शादी करूंगा, मगर भाई के न होने से एक गरीब किसान के यहाँ कोसमा में शादी की। मैं भला क्या कह सकती थी। जिस दिन शादी थी, उसी दिन भाई शाहजहांपुर आ गये। दादी ने कहा कि आज तुम्हारी बहनी की शादी है, तो बहुत घबराये और उसी समय चल दिये। दूसरे दिन वहाँ पहुँच गये। शादी हो चुकी थी। माता-पिता तो खुशी में देखने को आये कि रामप्रसाद आ गये, सब लोग खुशी मनावें, मगर वह अफसोस में बैठे आँसुओं से मुँह धो रहे थे। लोगों ने कहा कि क्या बात है ? बहुत पूछने पर बोले कि मेरी बहन की तकदीर फूट गई, जो ऐसे घर शादी हुई। मैंने तो अच्छा घर देखा था। अभी तो बहन की पढ़ाई भी तो बाकी है। खैर जो हुआ सो अच्छा ही है। आप एक दिन ठहरें। माता जी से कुछ रुपये लेकर विदा हो पहले लश्कर को चले गये, वहां हथियारों को तलाश कर तय करके पिनाहट आये। मेरी चौथी चला कर शाजहांपुर को वापिस आये। आप फिर लश्कर से तमंचे लाये। इतने में शाहजहांपुर में हद से ज्यादा चोरियां होने लगीं। पुलिस चोर-बदमाशों से मिल गई; तब इन लोगों ने तथा सेवा समितियों ने अपने सिर इन्तजाम रक्खा। मिर्जापुर से लाठियां मंगाईं। बल्लमें बढ़वाईं, रात रात भर पहरा दिया। तब चोरियाँ बंद हुईं, फिर आप लश्कर गये। दो बन्दूक लाए। कोसमा में आकर मेरी विदा कराई, स्टेशन पर जाकर एकान्त जगह में मेरी दोनों जांघों में बन्दूक बाँधकर भारी लहंगे में छिपा दी। फिर फर्रुखाबाद धर्मशाला में ठहरे। बिस्तर में बन्दूक बाँध मेरे सिरहाने रात भर रखीं। आप दूर लेटे। सवेरे फिर उसी तरह बाँध दीं। मैं कुछ खड़ी रहूँ, कुछ सहारे से पैर फैलाकर बैठ भी जाती थी। बारह बजे दिन के बरेली पहुँच गए, वहाँ स्टेशन मास्टर ने भाई को पहचान कर उतार लिया। उनकी मित्रता थी। बहुत कहा कि अभी मत रोको, फिर आऊंगा, मगर वह मुझे पकड़कर ले चले। मैंने बहुत कहा कि गठिया से मेरी टांगों में दर्द होता है। चलने से मजबूर हूँ,

मगर वह लिवा ले गए। धीरे-धीरे चले गाए। भाई कुछ उदास हो गये। मगर मैं तो समझ गई। उन्होंने खाना बनवाया। मैं बाहर निकल आई और चल पड़ी। मैंने कहा— ''मैं नहीं रहूँगी', उन्होंने बहुत कहा, खाना खाकर चली जाना। मैं रोने लग गई। मेरी टांगों में दर्द से बैठने में बहुत तकलीफ होती है, घर ही जाऊंगी। मैं चल पड़ी। पीछे से भाई भी चल दिए। जब गाड़ी में बैठ गए, तब बोले— ''बिट्टो तुम बहुत होशियार निकलीं। अब तो मैंने समझ लिया कि तमु सहायता दोगी।'' शाहजहांपुर स्टेशन से तांगे में बैठ घर पहुँच गए। मगर माताजी को कुछ न बताया। मुझसे भी मना कर दिया कि किसी को न बताना।

एक महीने बाद मैं कोसमा फिर आ गई। फिर माताजी से फुसला कर कुछ रोजगार करना चाहता हूँ पिताजी से न कहना, रुपये लेकर फिर हथियार लाना शुरु कर दिया। मैं शाहजहांपुर तक पहुँचा देती थी। एक दिन अचानक पुलिस ने घर पर छापा मारा। भाई खाना खाने बैठे ही थे कि राजाराम को गिरफ्तार करके मेरे दरवाजे को जो आए, सो मैंने भागकर कहा कि पुलिस आ गई। भाई बोले कि कुण्डी बन्द करके मेरी सन्दूक में जितनी किताबें हों, सब मिट्टी का तेल डालकर जल्दी जला दो। मैं तो जाता हूँ। आप छतों-छतों सड़क पर कूद गए, सीधे स्टेशन से गाड़ी में बैठकर आगरा आ गए। फिर पिनाहट पहुंच गए। वहाँ कौन पकड़ सकता था? पुलिसवालों ने किवाड़ तोड़ डाले। कुण्डी खोल दी। ''यह क्या जला दिया?'' घुड़की दी। ''रामप्रसाद कहाँ है? जल्दी बताओ।'' हम लोगों ने कहा कि पता नहीं ढूँढ़ लो। सारे सन्दूक खोल डाले। जो मिला ले गए, साइकिल उठा ले गए। पिताजी कचहरी में थे, दादी भी नहीं थीं। अकेली माताजी और लड़कियाँ रोती रह गईं। छोटा भाई सुशीलचन्द्र गोदी में था। हम चार बहन दो भाई थे। तीन बहनों की शादी हो गईं, एक दस बरस की मर गईं, दो बहन विवाह के बाद मर गईं, एक छोटी बहन तो जहर खाकर मर गई। भाई को फांसी का हुक्म हुआ, सुनकर उसने जहर खा लिया। उसकी शादी भाई ने एक जमींदार के साथ की थी। वह हम से छह मील की दूरी पर थी; कुचेला के मौजे में। छोटा भाई बीमार हो गया, तपेदिक हो गई थी। पिता जी अस्पताल में भर्ती कर आए, डाक्टर ने कहा कि दो सौ रुपये दो, तो हम ठीक कर सकते हैं। पिताजी ने कहा कि मेरे पास अगर रुपये होते तो यहाँ क्यों आता? मुझे तो गवर्नमेंट ने भेंट दिया; लड़का भी गया, पैसा भी गया। अब तो बहुत दिन हो गये। गणेशशंकर विद्यार्थी पन्द्रह रुपये मासिक देते हैं, उससे गुजर करता हूँ। एक हफ्ता अस्पताल में रहा, उसे खून के दस्त हुए, चौबीस घण्टे में खतम हो गया। दसवाँ दर्जा पास था। वह भी बोलने में अच्छा था। लोग कहते थे कि यह भी रामप्रसाद की तरह काम करेगा। अब इस समय मायके के सारे खानदान में मैं ही अकेली अभागिनी रह गई हूँ। फिर भाई तो कुछ दिन कोसमा, कुछ दिन रूहर बरबाई रहे। उनके साथी बहुत पकड़े गये। मैनपुरी षड्यन्त्र केस चला। आपके साथी मैनपुरी में भी थे। जो हथियार आप लाते थे मेरे यहाँ रखे रहते थे। मैं इसी तरह पहुँचा देती थी। साथियों को भी लाया करते थे। फिर माता-पिता

बहुत दु:खी होकर वह भी पिनाहट में रहने लगे। आप भी दो साल गायब रहे। वहाँ खेती भी की और वहीं आप कविता भी करते थे। आपने छह किताबें छपाई-मन की लहर, वोलशेविकों की करतूत, कैथोरायन, स्वदेशी रंग एवं दो बंगला से अनुवादित कीं। बंगला में बहुत निपुण थे। कुछ दिनों आगरे में डाक्टरी भी की। अपना नाम यहाँ बदल दिया था, रूपसिंह रखा था। विरोधी लोगों को नहीं ज्ञात हुआ कि यह फरार हैं, नहीं तो पकड़वा देते। वारंट में दो हजारा रुपये का इनाम था। एक दिन माता जी को क्रोध आ गया कि हम सब तेरे ही पीछे बरबाद हो गये। तेरे पढ़ने में पैसा लगाया कि कुछ पैदा करेगा। सो घर-बार से भी भेंट दिया, तेरे होने का क्या सुख, मुसीबत ही है। उसी समय आप चल पड़े। न कुछ कहा, खाली धोती आधी ओढ़े आधी पहने। सर्दी का मौसम था। शाहजहाँपुर तीसरे दिन रात को पहुँचे। एक पैसा भी पास न था। अठारह कोस आगरा पैदल गये। रास्ते में शेर मिला। आप एक बबूल के पेड़ के साथ खड़े होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि मेरा कोई कसूर है तो काल आ गया। ईश्वर की कृपा से शेर उलटा ही लौट गया। आप खड़े-खड़े देखते रहे कि वह फिर न लौट पड़े, मगर वह चला गया। आप कुछ देर बाद वहाँ से फिर चल दिये। आगरा पहुँच कर बिना टिकट छिपकर गाड़ी में बैठ गए। रात के बारह बज रहे थे। दादी को पुकारा। धीरे-धीरे आवाज दी। दादी ने समझा कि कोई पुलिस का आदमी है। बोलीं, 'क्यों मुझे सताते हो?' आपने कहा कि मैं रामप्रसाद हूँ। खोल दो, मैं पिनाहट से आया हूँ। दादी ने कूंडी खोली। बोले— ''दादी आग जला दो, कुछ खाने को रख हो तो दे दो, भूख के मारे दम निकल रहा है, तब बात कहूँगा।''

दादी ने कहा कि एक रोटी छीके पर रखी है, वह सूख गई होगी। बोले मुझे जल्दी दे दो, वह खाकर पानी पी लिया, तब बात निकली। कहा— माता जी नाराज हुई इससे चला आया। दादी ने कहा— तेरा तो वारण्ट जारी है। उन्होंने कहा कि मैं हाजिर हो जाऊँगा, जो कुछ ईश्वर की इच्छा होगी वह होगा। दूसरे दिन कप्तान साहब के सामने हाजिर हुए। कप्तान बोला कि आप तो खतम थे, अब जिन्दा कहाँ से आ गए। कहाँ रहे? तब जवाब दिया कि मैं आगरा रहा। क्या काम करते रहे? कहा कि कुछ दिन इलाज करते रहे। अस्पताल में डाक्टर को ऐवजी में रहे थे। डाक्टर का मेल था, वह छुट्टी पर चला गया था, कुछ दिनों कविता करते रहे, वह किताबें भी दिखाईं। कप्तान ने छह महीने को नजरानी बोल दी। इतने में आपने एक रेशम के कारखाने में 60 रुपये की नौकरी कर ली। पहली तनखा पिताजी के नाम भेज दी। लिख दिया कि माता जी मेरे अपराध को क्षमा कीजिये। यह रुपये रख लीजिये। अब मैं आपके ऋण को ही चुकता करूँगा। माता जी को बहुत दुख हुआ कि रामप्रसाद को मेरा कहना बुरा मालूम हुआ। इसलिये नंगा-भूखा चला गया। कुछ दिनों पता नहीं दिया। माता जी बहुत दुखित रहती थीं। पत्र तथा रुपये आने पर शान्ति आई। आपने छह महीने नौकरी की। बाद को आधे के हिस्सेदार बन गये।.....के साझे में कारखाना था। उस समय हम तीनों बहन मौजूद

थीं। बढ़िया तीन साड़ी बनारसी कामदार बनाई। कातिक दौज को बहनों को दूँगा। बड़े बहनोई को साफा बनवाया। काफी पैसा पैदा किया, फिर मां-बाप को भी बुलवा लिया क्रान्तिकारियों का काम बराबर करते रहे। फिर दो पिस्तौल बढ़िया, दो तमंचे एवं दो बंदूकें लश्कर से ले गए। शाहजहांपुर तक मैं पहुँचा आई। दो बार मैं पहुँचा सकी। एक वकील के यहाँ रखीं और रकम भी उन्हीं के यहाँ रखते थे। घर खर्चे को ही देते थे। वकील साहब से पिता जी और उनकी पत्नी से माता जी कहते थे। उनके दो लड़के थे। वह भाई के समान थे। बहुत ही विश्वास था। कारखाने का नाम छोटे भाई सुशीलचन्द्र के नाम से रखा और सुशील माला भी छपवाई थी। भाई रामप्रसाद दयावान् भी अधिक थे। कोई गरीब भिक्षा मांगे तो पाँच रुपये से लगाकर दस रुपये तक दे देते थे। किसी को जाड़े से ठिठुरता देखते, तो अपने तन से कपड़ा उतार देते थे, चाहे कितना ही कीमती क्यों न हो। एक दिन दादी नाराज हुईं कि क्या अपनी बहन का भी खयाल है, जो गरीब है? इतनी कीमत की लोई तू क्यों फकीरों को दे आया? कोई हलके मोल का कपड़ा दे देता। लोई बहन को ही दे आता। वैसे तो हथियारों के लाने को बड़ी बिटिया है। औरों को दुशाले। अगर वह पकड़ जाए, तो जेल ही में तो सड़े। इतना पैसा भी नहीं, जो छूट सके। आप बोले कि बिटिया का मुझे बहुत खयाल है। मैं दिवाली पर जाऊँगा, तब उसका सारा कर्जा निबटा दूँगा और जो साड़ी बनी रखी हैं वह तीनों को दे आऊँगा। बड़ी बिटिया से हिसाब पूछ आया हूँ कि कुल कितना कर्जा है। 400 रुपये बताए हैं। उसे तो मैं रेशम ही पहनाऊँगा। उसने मेरे बहुत काम निकाले, हथियार लाना, उनकी हिफाजत करना, मेरे न होने से भी संभाल रखना। जब मैं शाहाजहांपुर रहती थी, तब एक चौड़ा गड्ढा था, उसमें सारे सामान रखे रहते थे। ऊपर एक तख्ता डाल दिया और मिट्टी ड़ाल दी। 8 वें दिन सफाई, तेल लगाना, सुखाना पड़ता था। जब कहीं ले गये तो निकाल लिए, कुछ सामान बंब का भी रखते थे। एक दिन बारूद में रगड़ से जोर से आवाज हुई। आप बच गए, निकल कर भाग गए। हम लोग बहुत ही डरे, मगर मिट्टी से सब ढक दिया। एक छोटा-सा मकान अलग था। उसी में सब रहता था। उसी में उनके साथी भी छिपे रहते थे। मैं सबको खाना खिलाती थी। दूसरा कोई उस घर में नहीं जाता था। कुछ लोग आवाज सुनकर जग पड़े। बंदूकें कहां चलीं, हम लोग भी कहने लगे, देखो कहां से आवाज हुई। हम लोग तो सोते से जग पड़े। रामप्रसाद कहां है मालूम नहीं, वह तो कल से ही नहीं आया, गाँव गया है, आप खडहर गाँव में पहुँचे गए। पाँच दिन बाद आए। थाना नजदीक था। सिपाही भी आ गए। फिर मोती चौक में एक खाली मकान था, उसमें अपना काम करने लगे। बनारसीलाल बढ़ई तथा विष्णु शर्मा, चौदह साल की जेल भुगत आ गए— काकोरी केस में। फिर रामप्रसाद सावन में मुझे लेने आए। यहाँ से मुझे नहीं भेजा। आप कार्तिक की कह गए कि हम आवेंगे तक तक आप कुँआर की नौदुर्गा में गिरफ्तार हो गए। नौमी का दिन था। प्रातः समय आप दातून कर रहे थे कि पुलिस ने छापा मारा।

रामप्रसाद जल्दी निकले। आपने किवाड़ खोल दिये। एक पर्चा दे दिया, उसे आप पढ़ कर बोले अभी चलता हूँ। माता जी से कुछ बातें करनी हैं। अच्छी यहीं जो कुछ कहना हो कह दीजिए। माता-पिता दोनों खड़े ही थे। पिताजी के पैर छूकर कहा माफी दीजिए। माता जी के पैरों पर सर रखकर बोले, ''मैंने आपकी सेवा कुछ न कर पाई, माता धीरज रखना, छोटे भाई सुशीलचन्द्र को हृदय लगाया, मैं तो जाता हूं, न जाने फिर आया या न आया। देश-सेवा पर चाहे मेरा बलिदान ही क्यों न हो, मगर काम यही करूँगा। मरने से मुझे कोई डर नहीं। जेल से डर नहीं, शेर ही कटहरे में फाँसे जाते हैं न कि गीदड़। सब को प्रणाम करते हुए आप हँसते हुए चल दिए। सन् 1924 में गिरफ्तार हुए। ढाई साल मुकदमा चला। सन् 25 में छोटी बहन खतम हो गई। मेरे पुत्र पैदा हुआ। आप लखनऊ की जेल में थे, भानजे का जन्म सुनकर उत्सव मनाया। बहन की जहर खाकर आत्मा-हत्या की बात सुन कर शोक भी किया। अपनी जीवनी में उन्होंने सारी बातें लिखी हैं, जो उनके हाथ की लिखी हुई है। उसमें से कुछ बात छोड़ दी हैं, हां मुख्य, मुख्य बातें आत्मकथा में हैं। आपके मुकदमे में जो कुछ था पिता जी ने लगा दिया, फिर पिता जी बहुत दुखित हुए। रामप्रसाद जी ने कहा कि अब तो बिलकुल ही रोटी को भी तबाह हो चुके, मैं परवश हूँ। तब आपने.....को पत्र लिखा कि जो कुछ पैसा मेरे हिस्से का हो यह मेरे पिता जी को देना, कुल सब कारखाने का हिसाब 20,000 रुपये का था, आधा दस हजार चाहिए, उसमें 1700 रुपये का कपड़ा कलकत्ता, 1200 रुपये का मद्रास, 1500 रुपये का लाहोर, 2000 रुपये का शाहजहांपुर में उधार बँटा हुआ था। उन्होंने लिखा कि लाहोर से जो पैसा मिले वह हमारी बहन को दे देना। मैंने उसको देने को कहा था, बाकी थोड़ा-थोड़ा करके मेरे पिता जी को देते रहना। मगर.....ने एक पैसा नहीं किया। कारखाने का सामान उनके पकड़े जाने के बाद सब अपने घर को लदवा ले गये। मेरी माता जी ने कहा कि एक चरखा मेरी पुत्री को दे दो। वह अपने हाथ से ही कात कर कपड़ा बुनती है, उसी को पहनती है, मगर कुछ भी ध्यान न दिया। पछता कर बैठना पड़ा। फिर भी रामप्रसाद जी ने कई बार लिखा; कुछ भी न दिया, बल्कि अकड़ कर पिता जी से लड़े। फिर वकील को लिखा कि अब मैं तो जेल में हूँ, मेरे जो कुछ रुपये आप के यहाँ हैं, वह मेरे पिता जी को दे देजिए। पांच हजार जमा थे। दो हजार अभी दे देना। फिर मैं लिखूं तब देना। उन्होंने एक पाई भी न दी। कहते रहे कि दे देंगे। अब पिताजी बहुत दुखित हुए। माताजी बिलकुल दुख से कमजोर हो गईं। गणेशशंकर जी विद्यार्थी ने कानपुर में 2000 रुपये चन्दा करके मुकदमे में सहायता की। फिर भी मेरे भाई को फांसी की सजा मिली। वकील साहब को अन्तिम पत्र में लिखा ''पिताजी, माताजी आप लोगों ने मुझसे अच्छा प्यार किया। अब एक अन्तिम निवेदन है कि एक बन्दूक मेरी बहन को दे देना। बाकी छह हथियार आपके यहां रह जायेंगे। मेरे लिये आपने एक पत्र लिखा, माताजी को दिया कि बड़ी बिटिया को दे देना और उसे धीरज बंधाती रहना। वह पत्र माताजी से कहीं किसी ने

ले लिया। फिर न दिया। माताजी से मालूम होने पर मुझे बहुत ही दुख हुआ, पिता जी की हालत दुख से खराब हुई। तब विद्यार्थी जी 15 रुपये मासिक खर्च देने लगे। उससे कुछ गुजर चलती रही। फिर विद्यार्थी जी भी शहीद हो गये। मुझे भी बहन से ज्यादा समझते थे। समय-समय खर्चा भेजते थे। माता-पिता दादी भाई दो गाय थीं। रहने की जगह हरगोबिन्द ने एक टूटा-फूटा मकान बता दिया था। उसमें गुजर करने लगे। वर्षा में बहुत मुसीबत उठानी पड़ी। फिर पांच सौ रुपयं पं० जवाहरलाल जी ने भेजे। तब माताजी ने कहा कि कुछ जगह ले लो इस तरह के दुख से तो बचें। नई बस्ती में जमीन अस्सी वर्ग गज ले ली। एक छप्पर एक कोठरी थी। उसमें गुजर की। पिताजी भी चल बसे। माताजी बहुत दुखित हुई। एक महीने के बाद मैं भी विधवा हो गई। अब दोनों माँ-बेटी दुखित थीं। मेरे पास एक पुत्र तीन साल का था, माता जी बोलीं कि मैं तो शरीर से कमजोर हूँ किस तरह दूसरे की मजदूरी करूं। बिटिया अब क्या करना चाहिए। मैंने कहा कि जहाँ तक मुझसे होगा, माताजी आपकी सेवा करूंगी, आप धीरज बांधो। ईश्वर की यही इच्छा थी। माताजी के पास रामप्रसादजी के बटन सोने के तीन तोले के थे। उन्होंने किसी को नहीं बताए, छिपाए रहीं, जाने कैसा समय हो, इसलिए कुछ तो पास रखना चाहिए। पिताजी के स्टाम्प खजाने में दाखिल किए, दौ सौ रुपये वह मिले, फिर बटन बेच दिए। फिर मैंने ईंट-लकड़ी लगाकर एक तिवारा तथा उसके उपर एक अटारी बनवाई। ऊपर माताजी ने गुजर की। नीचे आठ रुपये में किराए पर उठा दिए। आठ रुपये में मैं, माताजी तथा बच्चे रहते थे बहुत ही मुसीबत से। एक समय कभी-कभी खाना प्राप्त होता था, मैंने एक डाक्टर के यहाँ खाना बनाने का काम छह रुपये में कर लिया। कपड़े की कमी से बहुत ही दुखित रहे। बच्चा स्याना हुआ। माताजी ने सबसे फरियाद की कि कोई इस बच्चे को पढ़ा दो। कुछ कर खाएगा। मगर शाहजहाँपुर में किसी ने ध्यान नहीं दिया। मैंने अपनी मेहनत में पांचवां दर्जा पास करा दिया, फिर तो पैसे का काम था। मजबूर होकर मजदूरी से गुजर की। कोसमा में तीन बीघा खेत था, वह भी कर्जे में रखा, कभी-कभी कोसमा मैं भी रह जाती थी। बिना पैसे कौन किसका होता है? यहाँ के लोगों में कोई भी मुँह से नहीं बोलता था। मैं अपनी मुसीबतों को लिख नहीं सकती। बहुत ही दुख उठाए। मेरी माताजी भी बहुत दुखित रहीं। मेरा दुख उनको बहुत सताता था। विष्णु शर्मा चौदह साल जेल काटकर छुटकर आए तो माताजी के दर्शन को आए। माताजी जाड़े के मारे ठिठुर रही थीं। उनका दु:ख देखकर चकित रह गए, पूछा आप को किसी भाई ने भी ममद नहीं दी। माताजी रोकर बोलीं कि मदद देने वाला तो परमात्मा है। आंसुओं की धारा लग गई। बोलना बड़ी देर में निकला कि मेरी पुकार ईश्वर भी नहीं सुनते, जो इस शरीर से छुटकारा दे। विष्णु शर्मा ने अपना कम्बल उतार कर उन्हें उढ़ा दिया। बोले माताजी मैं आपकी सेवा जो होगी करूँगा। फिर उन्होंने बहुत कोशिश की। स्वराज होने पर माताजी की पेंशन 60 रुपये हो गई। फिर माता जी के साथ मेरी भी गुजर होने लगी। मोटा खाना-पहनना

चलता रहा। पर माताजी के स्वर्गवास के बाद पेंशन बन्द हो गई और मुझ पर आफत का पहाड़ टूट पड़ा। लड़के को पढ़ाने को पैसा न हो सका। फिर मैंने मैनपुरी के नेता लोगों से भी फरियाद की कि आप लोग मेरे लड़के को पढ़ा दें, तो इसका जीवन सम्हल जाय। मगर अपने सुख के सामने गरीबों की कौन सुनत्ता है ? यह तो कोई नहीं सोचता कि कितने भाई कुर्बान हो गये, कितने जेलों में सड़े, तब आप आज एम.एल.ए. और मिनिस्टर बने बैठे हैं। जिन्होंने अपने को बलिवेदी पर चढ़ा दिया, उनके खानदान वाले भूखे मर रहे हैं, आज दिन जो मैं अनाथ दुखिता हूं। मेरे भाई रामप्रसाद जी होते तो अपने भानजे को कितना पढ़ाते। मेरी सहायता करते। स्वराज्य में आज मैं हर तरह की मुसीबत उठा रही हूँ। पर मेरी बात किसी ने भी न सुनी। मगर ईश्वर की महिमा कोई नहीं जानता। मैं बहुत दुखी फाके कर रही थी। मेरा लड़का कुसंग में फंस गया था। वह घर से निकल गया था। एक महीने तक पता न मिला। मैं और मेरी बहू दोनों अपने मन में सलाह कर रहे थे कि चलो दोनों गंगाजी में डूब जाएं, कहां तक भूखों मरें ? कपड़े से नंगें, एक दिन तो है नहीं जो काट लें। इतने में किसी ने आवाज दी कि माताजी आपको कोई मिलने आया है। मैं फटी धोती पहने थी। शर्म से ढक कर उठी और बोली, भाई साहब! कैसे तकलीफ उठाई ? उन्होंने कहा— चतुर्वेदी ओंकारनाथ पाण्डे मेरा नाम है। बहनजी, में आपके ही दर्शन को आया हूँ। फिर मैंने बार-बार धन्यवाद दिया। फिर पाण्डेजी ने कहा कि मेरे पास भाई बनारसीदास चतुर्वेदी जी का पत्र आया है कि कोसमा में शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जी की बहिनजी हैं। उनके यहाँ आप खुद जाकर देखो कि वह किस तरह गुजर करती हैं ? कितनी जमीन हैं ? वह सब देखकर मेरे लिये लिखे। मैंने अपना घर दिखाया कि आप भीतर जाकर देख सकते हैं कि मेरे पास तो पांच सेर दाने भी न होंगे, ज्यादा क्या कहूँ। मेरी हालत देखकर पाण्डेजी ने पांच रुपये दिये। मैंने चार रुपये की धोती ले ली, एक रुपया और खर्च में किया। उन्होंने चतुर्वेदी जी को सारा हाल लिखा, जो कुछ खुद देख गये थे। फिर चतुर्वेदीजी ने मेरे लिए पत्र लिखा कि अपना कुछ हाल लिखो। मैंने पत्र में थोड़ा-सा समाचार अपना दिया। भाई बनारसीदास चतुर्वेदीजी ने मुझ दीन की पुकार सुनी। आपने अपील निकाली, तो अनेक भाइयों को दया आ गई। सहायता भी मिलने लगी। राष्ट्रपति महोदय और श्री कृष्णकुमार बिड़ला से लगाकर छोटे-बड़े सबने मुझपर दया की। पर मैं संकोच से उसमें से पैसा न खर्च कर सकी। चतुर्वेदीजी ने लिखा कि आप संकोच न करें, यह पैसा आपका ही है। आप कपड़ा बनवा लीजिए। अन्न भी लेकर रख लीजिए। अब आप मुसीबत न उठाइये। बहुत दुःख आपने सहे। मैं आप को दुःख न होने दूंगा। फिर चतुर्वेदीजी ने बहुत कोशिश करके मेरी पेंशन चालीस रुपया करवा दी है। उनको मैं कहां तक धन्यवाद दूं। उसी से हम तीनों प्राणियां की जैसे-तैसे गुजर बसर हो रही है। (यह घटना 1960 ई० तक की है)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का अमर बलिदान

लेखक— आनन्ददेव शास्त्री (पूर्व प्रवक्ता) संस्कृत, दिल्ली सरकार

उस समय स्वामी जी निमोनिया के भंयकर आक्रमण से निकल चुके थे। अभी चिकित्सा जारी थी तथा निर्बलता बहुत अधिक थी, परन्तु रोग का सिर कट चुका था।

पं० इन्द्र जी (स्वामी जी के छोटे पुत्र) प्रतिदिन की तरह बलिदान भवन गये। अर्जुन पत्र का कार्यालय जहां इन्द्र जी रहते थे वहां से बहुत दूर नहीं था, अधिक से अधिक चार मिनट का रास्ता था। स्वामी जी की स्थिति अच्छी थी। कुछ महानुभाव भी वहां बैठे थे। स्वामी जी को कुछ स्वस्थ देखकर सभी प्रसन्न थे। स्वामी जी एक बात बार-बार कहते थे कि अब यह शरीर सेवा योग्य नहीं, अब तो इच्छा है कि अगले जन्म में ऐसा ही शरीर प्राप्त करके धर्म भी सेवा कर सकूं। इस पर वहां उपस्थित लोगों ने कहा— "अब तो खतरे की कोई बात नहीं है। डा० असांरी ने भी कहा कि रोग जा चुका है, कुछ दिनों में आप सर्वथा स्वस्थ हो जायेंगे। तब स्वामी जी बोले- जो भगवान् चाहेगा, होगा तो वहीं, मैं तो अपनी इच्छा प्रकट कर रहा हूं।

थोड़ी देर के बाद सब लोग चले गये, केवल उनका सेवक धर्मसिंह उनके पास रह गया। उसने चारपाई के पास कमोड रख दिया, स्वामी जी स्वयं उठकर शौचादि से निवृत्त हुए तथा चारपाई पर लेट गये। सब लोग अपने घरों को लौट गये।

पं० इन्द्र जी घर आकर चारपाई पर बैठे ही थे कि बच्चा भागता आया तथा उसने घबराये स्वर में कहा— "दादा जी को किसी ने गोली मार दी।" घर के सब लोगों ने अचम्भे तथा अविश्वास से उसकी बात सुनी, क्योंकि इन्द्र जी उस समय स्वामी जी के स्वस्थ होने का समाचार सुना रहे थे। यह समझकर कि बच्चे ने समझने में भूल की है, इन्द्र जी ने उससे पूछा— "तूने यह किससे सुना ? उसने उत्तर दिया— "आप पूछ लीजिये।" सड़क पर जीवनलाल जी बहुत ही घबराई आवाज में इन्द्र जी को पुकार रहे थे। इन्द्र जी को देखकर वे बोले— "स्वामी जी को किसी ने गोली मार दी।" इन्द्र जी ने पूछा— "गोली मारने वाला पकडा गया या नहीं ?" जीवनलाल जी गोली की आवाज सुनकर, सडक पर ऐसी खबर देने के लिये भाग आए थे। उन्होंने उत्तर दिया— "यह तो पता नहीं, शायद भाग गया हो।"

समाचार सुनकर इन्द्र जी के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी, परन्तु समाचार को समझने में देर नहीं लगी। ऐसी आशंका तो कई दिनों से चल रही थी। इतने में घर के ओर लोग भी आगे छज्जे पर पहुंच गये तथा पूछने लगे कि क्या बात है। इन्द्र जी ने कोई उत्तर नहीं दिया तथा यह कहकर कि स्वयं देखकर आता हूं, क्या बात है, नंगे पांव सीढियों पर उतर गये। पीछे घर के अन्य लोग, उनकी पत्नी तथा सभी चल पडे।

पं० इन्द्र जी भागते हुए भवन के नीचे पहुंचे तो देखा कुछ आदमी इकट्ठे हो गये हैं तथा

दो चार ऊपर भी जा चुके है। इन्द्र जी को देखकर सभी तरह तरह के प्रश्न पूछने लगे, किन्तु इन्द्र जी बिना कुछ उत्तर दिये ऊपर चढ गये। वहां घुसते ही इन्द्र जी की पहली नजर चारपाई पर पडी। स्वामी जी की आंखें बन्द थीं, मानो सुखपूर्वक सोये हों। सामने भगवे कुर्ते पर रक्त दिखाई दे रहा था, जो असली घटना की सूचना दे रहा था, अन्य था स्वामी जी को देखकर एक दम यह अनुमान नहीं लगता था कि वे सजीव नहीं है।

दूसरी नजर धर्मसिंह सेवक पर पडी। वह कमरे के बीच में जांघ को हाथ से दबाए पड़ा था। उसके चारों ओर खून फैला हुआ था। पं० इन्द्र जी ने पूछा— ''धर्मसिंह तुम्हारे भी गोली लगी है?''

धर्मसिह ने उत्तर दिया— ''हां पं० जी मुझे भी गोली लगी है।'' परन्तु आप मेरी चिन्ता न करें, स्वामी जी को कई गोलियां लगी हैं, उन्हें सम्भालिये। तब तक पं० इन्द्र जी भी पलंग के पास पहुंच चुके थे। इन्द्र जी ने स्वामी जी की कलई तथा माथे पर हाथ रक्खा, तो उसे बिल्कुल ठंडा पाया। उसी समय इन्द्र जी की दृष्टि पलंग के पीछे कमरे के कोने में, जमीन पर औंधे मुह लेटे हुए स्नातक धर्मपाल जी पर पडी। इन्द्र जी ने पूछा— ''धर्मपाल जी क्या आप को भी गोली लगी है?''

उन्होनें उत्तर दिया— ''मैनें गोली मारने वाले को दबा रक्खा है।'' इन्द्र जी ने घबरा कर पूछा— क्या सहायता के लिये आऊं? उनका उत्तर था— आप इसकी चिन्ता न करे। इस मैं नहीं छोडूंगा। आप स्वामी जी को संभालिये।

इस समय वहां बहुत से अन्य लोग भी पहुंच चुके थे। पहला काम यह किया गया, डा० अंसारी को टेलीफोन द्वारा बुलाया गया तथा कोतवाली में दुर्घटना की सूचना दी गई।

उसी समय दरवाजे पर शोर मचने लगा, इन्द्र जी भागकर दरवाजे पर जाकर क्या देखते हैं कि उनका सेवक राजाराम हाथ में लम्बा चाकू लिये अन्दर घुसने की चेष्टा कर रहा है तथा इन्द्र जी के बहनोई उसे पकड रोक रहे हैं। पूछने पर राजाराम ने कहा— '' मैं इस पापी को मार कर छोडूंगा, मुझे मत रोको, नहीं तो एक की जगह कई खून हो जायेंगे।'' इन्द्र जी ने जाकर राजाराम का चाकू वाला हाथ पकड लिया। वह इन्द्र जी को देखकर चिल्लाया— ''पं० जी आप भी मुझे रोक रहे हैं? हमारे जीते जी उसने स्वामी जी को गोली मार दी, हम इसे अभी मारेंगें।''

राजाराम खूब तगडा बहादुर नौजवान था, उसकी आंखें खून बरसा रही थी अन्य उपाय न देखकर इन्द्र जी ने ऊंचे स्वर में उसे आज्ञा दी— ''क्या आज्ञा का उल्लंघन करोगे, चले जावों यहां से। क्योंकि उसे मारने से सच्चाई लोगों के सामने नहीं आपाती। राजाराम का हाथ ढीला हो गया। उसने खूनी आंखों से दुष्ट अब्दुल रसीद को देखा तथा जिस तेजी से ऊपर आया था, उसी तरह धड़धड़ाता नीचे उतर गया। सच्चा सिपाही आज्ञा का उल्लंघन न कर सका।

राजाराम वहां से तो चला गया, किन्तु उसका क्रोध शान्त न हुआ, उसके बाद नये बाजार

में दस मिनट में तीन व्यक्ति घायल हुए। जिनमें से एक मर गया। तीन व्यक्तियों पर मुकद्दमा लम्बे समय तक चला तथा अन्त में तीनों बरी हो गये।

बेचारा राजाराम हवालात में बीमार हो गया बाहर आकर वह संभल न सका तथा वह जेल में लगी बीमारी के कारण असमय में चल बसा।

डा० अंसारी तथा पुलिस को साथ ही साथ टेलीफोन किये गये थे, परन्तु डा० अंसारी पहले ही आ पहुंचे। स्वामी जी की चिकित्सा डा० अंसारी ही कर रहे थे; तथा जब कभी उन्हें दिल्ली से बाहर जाना पडता, उनके स्थान पर डा० अब्दुल रहमान स्वामी जी को देखते थे, अत: उक्त डा० साहब भी साथ ही आए थे।

जब डा० साहब को फोन मिला तो उन्होंने सोचा कि निमोनिया फिर उग्र हो गया है, जिसके कारण उन्हें बुलाया गया है। 1919 से यही डाक्टर स्वामी जी की देख रेख करते थे, स्वामी जी उनके अतिरिक्त किसी भी औषधि को नही लेते थे।

हां तो जब डा० अंसारी बलिदान भवन पहुंचे तो आश्चर्य तथा दु:ख से स्तब्ध रह गये। उस दृश्य को देखकर परिस्थिति को समझने की चेष्टा करते रहे। कुछ देर तक जहां के तहां खडे रह गये, मानो पांव भूमी में गड गये हो। फिर आगे बढकर उन्होने स्वामी जी की नाडी देखी, माथे तथा पेट को छूआ। आंखों के पर्दे पलट कर देखा, अन्त में आंसूभरी आंखों से पं० इन्द्र जी की तरफ देखकर कहा— ''भाई अब तो कुछ बाकी नहीं रहा गोली सीधी छाती में लगी है मृत्यु तुरन्त हो गई प्रतीत होती है।'' फिर डाक्टर जी धर्मसिंह की तरफ मुडे तथा उसकी जांघ पर पट्टी बांधने लगे।

इतने में पुलिस आ पहुंची। एक इन्सपेक्टर, दो सब इन्सपेक्टर बडी डट-फट के साथ मैदान में उतरे, मानो युद्ध के लिये तैय्यार होकर आये हों।

उस समय तक तथा वह समय आध घंटे से कम न होगा धर्मपाल जी हत्यारे को नीचे दबाए पडे रहे। खूनी के जिस हाथ में भरा हुआ पिस्तौल था, उसे धर्मपाल जी ने एक हाथ से दबा रक्खा था, दूसरे हाथ से उसके सिर को, खूंटे की तरफ फर्श में गाड रक्खा था और उसकी पीठ पर अपनी छाती का पूरा जोर देकर लेटे हुए थे। कई लोगों ने बीच-बीच में सहायता के लिये हाथ बढाया। उन सबको धर्मपाल जी ने दूर से ही हटा दिया। यह बात ठीक भी थी, क्योंकि यदि हत्यारे पर से धर्मपाल जी का शिकंजा यदि कुछ भी ढीला पड जाता तो न जाने वह कितना अनर्थ करके भाग निकलता।

सर्वसाधारण को धर्मपाल जी के उस धैर्य और बल को देख कर आश्चर्य हुआ था पर जो लोग उन्हें बचपन से जानते थे, उन्हें कुछ भी आश्चर्य नहीं हुआ। विद्यार्थी अवस्था में ही साथियों पर उनकी शारीरिक दृढता का आतंक था। उसके बडे दुर्भाग्य उदित हुए समझो, जो फुटबाल के मैदान में हाफ-बैक धर्मपाल जी के सामने पड जाय। यदि हाफबैक की लात सामने के खिलाडी

के पैर जा लगी तो भयानक दुर्घटना का हो जाना अनिवार्य था। तब या तो हड्डी टूट जाती थी अथवा टांग पर गेंद जैसा गोला सूज जाता था। यह बिल्कुल आकस्मिक था कि अब्दुल रशीद का वास्ता, धर्मपाल जी जैसे ठोस आदमी से पड़ा— परन्तु विधाता की इच्छा प्राय: ऐसी घटनाओं से पूरी होती है, जिन्हें मनुष्य आकस्मिक कहता है। यह विधाता का विधान था कि स्वामी जी के बलिदान का कानूनी प्रमाण लाल हाथों के साथ ही गिरफ्तार हो। यह कार्य धर्मपाल जी जैसे व्यक्ति के हाथों से ही हो सकता था।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी ने लिखा है— सच्चे और पक्के साथी मैंने बहुत देखे हैं, परन्तु धर्मपाल जी की अपेक्षा अधिक ठोस बात निभाने वाला संगी अब तक मेरे अनुभव में नही आया है। वह स्वामी जी के शिष्य भी थे तथा निजी मन्त्री भी— परन्तु वह सारा आध्यात्मिक सम्बन्ध था। घर में खर्च मंगाकर निर्वाह करते थे तथा धर्मभाव से स्वामी जी की सेवा करते थे। उन्हें उस घटना से जो यश प्राप्त हुआ वे वस्तुत: उसके अधिकारी थे।''

पुलिस अधिकारियों ने कमरे में पहुंचकर काफी चुस्ती से काम किया। एक सब इन्सपेक्टर धर्मपाल जी की तरफ झुका तथा दूसरा धर्मसिंह की ओर। सब इन्सपेक्टर ने क्षणिक ध्यान से देखकर स्थिति को समझ लिया तथा धर्मपाल जी से कहा कि जब तक मैं ना कहूं तब तक शिकंजे को ढीला मत कीजियेगा। जब उसने अपना रिवाल्वर हत्यारे के माथे पर रखकर कहा— खबरदार अगर हिला तो गोली छोड दूंगा। फिर फुल बूट वाला अपना दायां पैर उसकी कलाई पर बडे जोर से मार कर दबा दिया। जब देख लिया कि कलाई बिल्कुल ढीली हो गई है, तो बांये हाथ से उसका पिस्तौल पकडकर धर्मपाल जी से उसे छोड देने को कहा। हाथ छोड देने पर हत्यारे का पिस्तौल सब-इन्सपेक्टर के हाथ में आ गया। तब सब इन्सपेक्टर ने धर्मपाल जी को हत्यारे को छोड देने के लिये कहा।

हत्यारा अधेड उम्र का सामान्य से शरीर का व्यक्ति था, उसका नाम अब्दुल रसीद था।

अब्दुल रसीद ने उठकर चारों ओर देखा तो उसकी नजर डा० अंसारी पर पडी। कह नहीं सकते उसकी वह अदा स्वाभाविक थी या कृत्रिम वह डाक्टर को देखकर मुस्कराया तथा काफी ऊंचे स्वर से उसने कहा— ''डाक्टर साहिब अदाब अर्ज।'' उस अदाब अर्ज में पहली किसी मुलाकात की झलक आती थी। बाद में पूछताछ से पता चला कि अब्दुल रसीद ने अपने खूनी संकल्प की सूचना बहुत से प्रतिष्ठित मुस्लमानों को दे रखी थी। उनमें से कुछ ने उसे रोका तथा कुछ ने उसे प्रोत्साहित किया। डा० साहब उनमें से जिन्होंने उसे रोका था। इस कार्य के समर्थन में उसने उलेमाओं से फतवा तक ले लिया था।

उस हल्की मुस्कान के बाद अब्दुल रसीद के चेहरे पर मुर्दनी छा गई। जो तब तक विद्यमान रही, जब तक वह जेल में फांसी की रस्सी से झूलकर, कर्मफल पाने के लिये बड़े दरबार में नहीं चला गया।

डा० अंसारी अपने लिये अन्य कोई कार्य न देखकर तथा उस स्थान के वातावरण को अत्यधिक गर्म होता देखकर वहां से चले गए। पुलिस की एक टुकड़ी अब्दुल रसीद को हथकडी डाल लारी में बिठा कोतवाली ले गई, दूसरी टुकडी बलिदान भवन पर तैनात कर दी गई। उस समय वहां पुलिस के कई अन्य बडे अधिकारी भी पहुंच चुके थे।

बाद में हत्यारे पर न्यायालय में हत्या का अभियोग चला। कहते हैं वकील के कहने पर उस दुष्ट ने पागल का अभिनय करते हुए एक दिन अपनी टट्टी भी खाली थी। परन्तु जज सब कुछ समझ चुके थे अत: उसे फांसी की सजा हुई।

जब स्वामी श्रद्धानन्द की अर्थी को निगम बोध घट यमुना ले जाया जा रहा था। तब उनके जलूस में लाखों शोकाकुल हिन्दू सम्मिलित हुए थे। परन्तु इस घटना ने साम्प्रदायिक रंग पकड लिया अत: अब्दुल रसीद के जनाजे में भी लाखों मुसलमान सम्मिलित हुए थे।

स्वामी जी की हत्या का मुख्य कारण स्वामी जी का शुद्धि सभा का प्रधान बनना था जिससे दुष्ट मुसलमान भड़के हुए थे।

इसके अतिरिक्त 1924 में यंग इंडिया में महात्मा गांधी द्वारा महर्षि दयानन्द, आर्य समाज तथा सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध लिखा गया लेख भी स्वामी जी की हत्या का एक मुख्य कारण था।

ऐसे महान् त्यागी, युग पुरुष, वीर पुरुष संन्यासी को शतश: नमन।

सम्पर्क सूत्र
111/19, आर्यनगर, झज्जर
मोबाईल :- 9996227377

नशों के मकड़जाल में फंसता हमारा समाज

राजबीर आर्य, बहादुरगढ़

महात्मा गांधी जी कहा करते के देश स्वतन्त्र होने पर पहली कलम से जो निर्णय होगा वह शराब बन्दी और गौ हत्या पर प्रतिबन्ध होगा। कुछ परिस्थितियां ऐसी रही होंगी जिनसे यह निर्णय वे न करवा सके। आज जिन नशों का प्रचलन है उनमें शराब, चरस, भांग, अफीम, स्मैक, चूरा पोस्त, भांग, मार्फिन, हेरोईन, कोकीन, पान मसाला, गुटका, बीड़ी, सिगरेट, ई-सिगरेट, हुक्का, नशीली गोलियां, इंजेक्षन व कफ सिरिप के रूप में सेवन करने का है। भारतवर्ष में पंजाब, महाराष्ट्र, गोवा, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली व आंदिवासी पिछड़े क्षेत्रों में ज्यादातर नशों का सेवन किया जाता है। वर्तमान में पंजाब में सबसे ज्यादा नशा किया जाता है। पंजाब एक बार तो खालीस्तान के चक्कर में जला और अब नशों से पंजाब जल रहा है। एक ही महिने में नशों के कारण 23-23 लोगों की मृत्यु हो रही है। युवा पीढ़ी भयंकर चपेट में आ गई है। हरियाणा के अन्दर शराब, चरस और तम्बाकू पीने का ज्यादा प्रचलन है। शराब तो बड़ी सुगमता से सरकार ही उपलब्ध करा रही है, जहाँ तक चरस (सुल्फा) का प्रश्न है यह गांव के अन्दर जो शुल्फैड़ी तथाकथित बाबा मन्दिरों में बैठे हैं, उनके द्वारा इसकी सिखलाई व सप्लाई की जाती है। तम्बाकू का सेवन तो रीति-रिवाजों में सम्मिलित हो गया है। फरमान जारी कर दिया जाता है कि हुक्का-पानी बन्द कर देंगे जैसे यह

कोई आक्सीजन का सिलेण्डर हो। जो नहीं पीते उनका कैसे हुक्का बन्द करोगे ? स्वामी ओमानन्द सरस्वती अपनी पुस्तक ''पापों की जड़ शराब'' में लिखते है कि शराब पीने वाला निर्लज हो जाता है और फिर कोई भी पाप कर्म करने से नहीं हिचकिचाता। आज अगर देखा जाये तो ज्यादातर अपराध व दुष्कर्म शराब के नशे में ही किये जाते है। हम चरस की बात कर रहे थे। इसका बहुत बड़ा व्यापार हरिद्धार से कावड़ियों के माध्यम से भी होता है। भांग का ज्यादा प्रचलन उतर प्रदेश के मथुरा इत्यादि धार्मिक स्थलों पर ज्यादा है। भांग के विषय में प्रसिद्ध है कि बुद्धि को नष्ट करके मनुष्य को पागल बना देती है। अगर कोई उल्टी-उल्टी बाते करता है तो कहावत प्रचलित है कि 'क्या भांग पी रखी है ? शराब के नशे बिना कोई भी पार्टी स्तरीय नहीं मानी जाती है। हरियाणा का किशोर व नवयुवक विवाह-शादियों में ही शराब पीना सीखता है। 'चस्का फिर नहीं किसी के बसका' वाली बात से उसका जीवन नष्ट हो जाता है। एक शराबी से पूरा परिवार व रिश्तेदार प्रभावित होते हैं। नशीली गोलियों के सेवन से ही तमिल में 205, पंजाब में 186, हरियाणा में 76, केरल में 64 तथा मध्य प्रदेश में 40 व्यक्तियों की मृत्यु के आंकड़े है, ये आकड़े 2016 के हैं, और वास्तविकता तो इससे ज्यादा है। सरकार के पास नशों से मरने वालों का पूरा रिकॉर्ड नहीं है। इससे होने वाली बीमारियों और उनके कारण मृत्यु का भी पूरा रिकार्ड नहीं है।

ई-सिगरेट— आजक़ल बड़े-बड़े शहरों में ई-सिगरेट का प्रचलन बढ़ रहा है। यह ई-सिगरेट क्या होती है, इसको जान लेना आवश्यक है। इसका सबसे पहले प्रचलन युरोप के देशों में शुरु हुआ है। इसे रूयान कहते है, जिसका अर्थ सिगरेट जैसा एल्कट्रोनिक्स उपकरण होता है। जिसमें निकोटीन व गलैसरीन जैसे तरल पदार्थ भर दिये जाते है। इस उपकरण में एक छोटी सी बैटरी होती है। बटन दबाते ही पाईप को सिगरेट की तरह पीने से सिगरेट जैसा ही अनुभव होता है। इसका सबसे ज्यादा प्रचलन मुम्बई जैसे महानगरों में है। अध्ययनों में इस ई-सिगरेट के सेवन से कैंसर, दमा तथा अनेक बीमारियों का होना पाया गया है। जो रईसजादे इसको सेवन करना अपना स्टेटस सिम्बल मानते है, वे सावधान हो जाये कि आप रोगों के घोर घने जंगल में प्रवेश कर रहे है।

बीड़ी, सिगरेट, पान, मसाला, गुटका, तम्बाकु व हुक्का पीना भी एक व्यसन में सम्मिलित है। आज विश्व भर में इनसे होने वाली बीमारियों विशेषतया कैंसर के आकड़े चौकाने वाले है। मुंह के कैंसर के 80 प्रतिशत रोगी पान, गुटका व तम्बाकू के सेवन से ही पाये जाते हैं। आजकल तम्बाकू हुक्का बार खुल गए है। गांवों के अन्दर नौजवानों के समूह के समूह हुक्का पीते हुये दिखाई देंगे। इनके सेवन से फेफड़ों सम्बन्धी रोगों की उत्पत्ति हो रही है। तम्बाकू के सेवन से हृदय, अल्सर, टी.बी. और घाव भरने में अधिक समय लगना जैसी भी बीमारियां होती है। भारतवर्ष में लगभग हर तीसरा-चौथा वयस्क व्यक्ति किसी ना किसी रूप में तम्बाकू का सेवन करता है। केवल मात्र बीड़ी पीने वाले की ही सन् 2011 में पांच लाख अस्सी हजार व्यक्ति मौत के मुंह में चले गयें। पान, गुटका, मसाला और सिगरेट जैसे

तम्बाकू से होने वाली मृत्यों के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन एक अध्ययन के अनुसार प्रत्येक छः सैकण्ड में तम्बाकू से एक मृत्यु हो रही है। यही नहीं टी.ओ.आई. कि रिपोर्ट के अनुसार तम्बाकू लोगों के स्वास्थ्य और जेब दोनों पर डाका डालता है। जिससे देश की अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। तम्बाकू के सेवन से चौंकाने वाले डीटा सामने आये हैं जो इस प्रकार है।

इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के अनुसार भारत में कैंसर से होने वाली तीस प्रतिशत मृत्यु दर तम्बाकू के सेवन से होती है। जिसमें 42 प्रतिशत पुरुष और 18.3 प्रतिशत महिलाएं होती है। तम्बाकू के अन्दर जो कैमिकल्ज प्रयोग होते हैं, उनकी पहचान कैंसर उत्पन्न करने वाली पाई गई है। विज्ञापनों पर रोक और सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिबन्ध के पश्चात् भी इसका खुले आम प्रयोग देखा जा सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि यदुवंशियों का नाश शराब ने किया। पृथ्वीराज चौहान का नाश शराब ने किया। भारत वर्ष देश को गुलाम शराब ने किया। आज के लगभग 1500 वर्ष पूर्व चार नशों का प्रचलन ज्यादा था। शराब, चरस, भांग और अफीम। राजपूत लोग शराब पीकर उत्पात मचाते थे और आपस में ही लड़-भिड़ कर कमजोर हो जाते थे। चरस का प्रयोग भक्ति और मुक्ति का साधन बताया जाने लगा। भांग का प्रयोग शत्रु की सेना के भोजन व स्वयं चिकना माल गटकने में किया जाता था। अत्यन्त परिश्रम का कार्य करने वाले अफीम का सेवन करते थे। बाकि नशे जिनका प्रचलन वर्तमान में है यह उपरोक्त नशों के एक्सट्रैक्ट निकाल कर उल्टे-फुल्टे कैमिकल्ज मिलाकर तैयार किये जाते है। तम्बाकू का प्रचलन मुस्लिम संस्कृति की देन है। अब यह सब कुछ होने के बाद निष्कर्ष निकलता है कि क्या उपाय किये जाये, जिससे इन नशों से हमारे देश को मुक्ति मिले। सर्वप्रथम उपाय तो यह है कि सभी धार्मिक, सामाजिक व अन्य संगठन किशोरों, नवयुवकों व अन्य वर्ग के लिए नशों से होने वाले दुष्परिणामों और गम्भीर बीमारियों सम्बन्धी जागरूकता अभियान चलाकर उनको सचेत करें। दूसरा सरकारें इस राजस्व के लालच को त्याग कर गुजरात व बिहार से शिक्षा लेकर शराब पर प्रतिबन्ध लगायें। एक राज्य से दूसरे राज्य यहां तक पाकिस्तान से भी हो रही तस्करी को रोकें। प्रशासन अपनी जिम्मेवारी पूर्ण रूप से निभाये तो भी बहुत कुछ अंकुश लग सकता है। स्कूल के पाठ्यक्रमों में शराब व तम्बाकू इत्यादि नशों के दुष्परिणामों के विषय में सामग्री रखी जाये। स्कूलों व कॉलेजों में प्रभावशाली वक्ता अपना नैतिक कर्त्तव्य समझ कर जायें, और मैं समझता हूँ कि आर्यसमाज इस चुनौती को स्वीकार करके देश के होनहार उज्ज्वल भविष्य के कर्णधारों को इन व्यसनों से दूर रहने की शिक्षा प्रदान करें तो अवश्यमेव ही लाभ प्राप्त होगा।

इसके साथ-साथ किसी भी प्रकार की सरकारी नौकरी में कार्यरत व्यक्ति किसी भी प्रकार के नशे का सेवन करता है तो तुरन्त सेवामुक्त कर दिया जाए। शिक्षक, रक्षक, चिकित्सक, चालक एवम् राजनेताओं पर तो कम से कम तुरन्त सख्त कार्यवाही हो। लेकिन ऐसा कानून बनाए कौन? रक्षक ही भक्षक बने बैठे हैं।

चौथी आर्यवेदप्रचार यात्रा सम्पन्न हुई

हरयाणा के प्रत्येक जिले में आयोजित की जाने वाली वेदप्रचार यात्रा कार्यक्रम के अन्तर्गत चौथी वेदप्रचार यात्रा दिनांक 8 नवम्बर 2018 से 14 नवम्बर 2018 तक रोहतक जिले के ग्रामों में की गई। उनकी सूची इस प्रकार है—

8 नवम्बर, 2018 बोहर भालौठ बलियाणा, 9 नवम्बर, 2018 गढ़ी डी.ए.वी. स्कूल, रोहतक पाकस्मा, 10 नवम्बर, 2018 कारौर खरावड़ नौणन्द, 11 नवम्बर, 2018 किसरैंटी अटायल गांधरा, 12 नवम्बर, 2018 मकड़ौली खुर्द लाढ़ौत मकड़ौली कलां, 13 नवम्बर, 2018 टिटौली भगौतीपरु सिंहपुरा, 14 नवम्बर, 2018 मायना करौंथा बालन्द

इन ग्रामों में आचार्य विजयपाल जी योगार्थी के नेतृत्व में यज्ञ के समय उपिस्थत श्रद्धालुओं को यज्ञोपवीत का महत्त्व बताकर सभी को यज्ञोपवीत धारण कराये। तदनन्तर यज्ञ, उपदेश, व्याख्यान, भजनादि के द्वारा श्रोताओं के ज्ञान में वृद्धि की गई। इस अवसर पर आचार्य विजयपाल जी के सहयोगी रूप में श्री सत्यवीर जी शास्त्री रोहतक, श्री प्रो० ओम् कुमार जी जींद, डॉ० जगदेव जी विद्यालंकार रोहतक, डॉ० राजपालजी रोहतक तथा भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य ने भी श्रोताओं को सम्बोधित किया, जिसमें समाज में फैली कुरीतियों के प्रति सावधान किया और नशों से दूर रहने की तथा प्रतिदिन यज्ञ करने की प्रतिज्ञायें भी कराई। स्कूलों के छात्रों के लिए ब्रह्मचर्य पालन, आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि करने की प्रेरणा दी तथा साथ ही माता-पिता, गुरु, अतिथि, संन्यासी, विद्वानों की सेवा करने के लिए भी शिक्षा दी गई।

इस प्रकार यह चतुर्थ वेदप्रचार यात्रा ईश्वर की कृपा तथा श्रद्धालु आर्यजनों की सहायता से निर्विघ्न पूरी हुई। इस प्रचार यात्रा में निम्नलिखित ग्रामवासियों ने भी पूर्ण आत्मीयता से सहयोग दिया— सर्वश्री कृष्ण शास्त्री बोहर, धनीराम आर्य बोहर, अजय आर्य बोहर, राजेन्द्रसिंह तिलकनगर रोहतक, सुखबीर दहिया तिलकनगर रोहतक, जगदेव हुड्डा रोहतक, मनजीत आर्य बोहर, विशाल आर्य बोहर, यशपाल आर्य बोहर, जुगनू आर्य बोहर, कुलदीप वैद्य बलियाणा, श्रीमती कमला भालोठ, शान्तिदेवी द्वारा सुखवन्त आर्य भालोठ, अजीत शास्त्री भालोठ, धर्मवीर किसरैंटी, प्रवीण शास्त्री किसरैंटी, समेराम अटायल, प्रवेश शास्त्री अटायल, उदयसिंह अटायल, मा० जयकरण आर्य गांधरा, श्रीमती रुकमणी गांधरा, विशेष आर्य गान्धरा, डॉ० सतीश कुण्डू गढी नरेन्द्र आर्य गढी, विजयपाल आर्य गढ़ी, सतीश कुमार आर्य गढी, ओम्प्रकाश प्रधान गढी, राकेश आर्य खेड़ी साध, विजयपाल आर्य पाकसमा, विनोद आर्य पाकसमा, श्रीकृष्ण आर्य पाकसमा, ब्रह्मप्रकाश आर्य पाकसमा, वेदमित्र आर्य पाकसमा, मा० राजपाल आर्य कारोर, वेदसिंह आर्य खरावड़, वेदपाल आर्य-ज्ञानसिंह आर्य खरावड़, पाले आर्य नौनोंड, राजसिंह नौनोंड, बलवीर आर्य नौनोंड, सुमित आर्य सरपंच मकड़ौली खुर्द, सत्यवीर आर्य मकड़ौली खुर्द, सत्यव्रत शास्त्री मकड़ौली कलां, सत्यवान् आर्य मकड़ौली कलां, दयानन्द शास्त्री टिटौली, भूपसिंह आर्य टिटौली, वीरेन्द्र शास्त्री-जिलेसिंह टिटौली, मास्टर जगतसिंह भगवतीपुर, चान्दराम आर्य भगवतीपुर, डॉ० शमशेर सिंहपुरा मा० राजवीरसिंह आर्य-बलजीत सिंह आर्य-वीरेन्द्र आर्य सुंडाना, प्रकाश आर्य सुंडाना, किताबो-रणधीर आर्य-देवेन्द्र आर्य-मास्टर रामेश्वर आर्य सुंडाना, संजय आर्य सुंडाना, रामवीर शास्त्री-डॉ० जगदीप शास्त्री, दलजीत आर्य-सोमदेव शास्त्री-बहन कृष्णा आर्या, राजबाला आर्या-जयवीर शास्त्री-भगवान्सिंह आर्य-बालन्द।

इन सभी सहयोगी और दानदाताओं का आर्यवेदप्रचार समिति की ओर से विशेष धन्यवाद।

निवेदक

महावीर शास्त्री
8168389119

कृष्णकुमार शास्त्री
9466281475

योगीराज स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती

लेखक - आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत) दिल्ली सरकार

स्वामी आत्मानन्द जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अन्तर्गत अंछाड ग्राम में, एक ब्राह्मण परिवार में सन् 1879 में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री दीनदयालु था। आप कृषि पोरोहित्य तथा कथावाचन का कार्य करते थे। आपकी माता जी का नाम श्रीमती धनदेवी था। स्वामी जी की बड़ी बहन उस समय 30 वर्ष की थी बडे भाई का नाम हरनारायण था जो आप से 20 वर्ष बडे थे। छोटे भाई हरदेवा 5 वर्ष के तथा छोटी बहन ज्ञानदेवी 3 वर्श की थी।

नामकरण— आपका नाम बचपन में मुख्त्यार सिंह रक्खा गया। अंछाड ग्राम कृष्णा नदी के पश्चिम में, पांच किलो मीटर दूर पंचतीर्थ स्थान, जहां कृष्णा, हिन्डन, बाग, काली तथा कागाडबनी नदी मिलती है स्थान पर स्थित है। मध्य में चान्द्रायण वन पर स्थित था। अंछाड ग्राम, कृष्णा तथा हिन्डन नदी के संगम पर स्थित है।

बरनावा जिसे वारणावत भी कहा जाता है जहां महाभारत में लाक्षागृह बनाया गया था भी अंछाड से कुछ किलोमीटर दूर है। आपके पिता आपको बरनावा तथा बडोत भी समय-समय पर ले जाते थे।

शिक्षा— नसौली ग्राम की चौपाल में एक पाठशाला थी। उसी पाठशाला में आपके पिता जी ने आप़को अध्ययन के लिये प्रारम्भ में प्रविष्ट कराया। बूढपुर निवासी भगवाना वहां पर अध्यापक थे। आप ने एक वर्ष मे दो-दो कक्षाएं उत्तीर्ण की। उक्त विद्यालय से चौथी कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आपको आपके फूफा श्री नवल प्रसाद जी के पास लाख गांव में पढने के लिये भेज दिया गया। आप कुछ समय बाद वहां से चले आये। आप घर पर बड़े भाई हरनारायण से मिलकर कृषि कार्य करने लगे।

बाद में आपके पिता जी ने आपको अंछाड गांव से पांच किलो मीटर दूर, बामनौली गांव में काशी से पठित विद्वान् पं० परमानन्द जी के पास भेज दिया, वहां आप सारस्वत व्याकरण पढ़ने लगे। आप बामनौली में ही रहते थे तथा भोजन भी स्वयं ही बनाते थे। आपके पिता ज्योतिष में होडा चक्र तथा शीघ्र बोध पढे हुए थे। आप मुख्त्यार को भी ज्योतिष पढाना चाहते थे। मुख्त्यार को भी ज्योतिष पढना अच्छा लगा। परन्तु माता जी के रहते वे श्रीनगर जैसे ज्योतिष केन्द्रों पर जाने को तैय्यार न थे। दैवयोग से आपकी माता जी पैसठ वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधार गई।

गृहत्याग— कृषि कार्य में कुछ कमी रहने के कारण भाई हरदेवा ने आपको डांटा तथा पीटा भी अत: आपने घर छोडकर चले गये तथा श्रीनगर में जाकर ज्योतिष पढने लगे।

1899 के वर्ष में आप मुजफरनगर में कुटवा ग्राम में अध्यापन कार्य करने लगे। उस समय आपकी आयु 20 वर्ष की थी।

कुछ समय के बाद आप फिर पं० परमानन्द जी के पास व्याकरण पढने लगे व्याकरण में आपने लघु कौमुदी पढनी प्रारम्भ की। उस समय आपका पेट बहुत खराब हो गया अत: एक

आर्य श्री अनुभवानन्द आपको आर्य समाज में ले गये। वहां श्री अनुभवानन्द ने आपको मकई की रोटियां खिलाई जिससे आपका पेट पूर्ण रूप से ठीक हो गया। इसके बाद आप ने मध्य कौमुदी पढी। उसके बाद आप मेरठ पं० कन्हैया लाल के पास चले गये।

काशी प्रस्थान— आप 25 वर्ष की आयु में विद्वानों की नगरी काशी में पढने को गये। वहां आप पं० तिवारी से विद्या पढते तथा सेठ भूरामल मारवाडी के भोजनालय में भोजन करते।

आपने साहित्य श्री देवी प्रसाद शुक्ल से पढा तथा शंकर भट्टाचार्य से न्याय शास्त्र पढा। फिर आप सेठ भूरामल की पाठशाला में अध्यापन कार्य करने लगे।

व्यासपीठ पर आसीन होना— दक्षिणात्य द्राविड पं० महा महोपाध्याय श्री लक्ष्मण दत्त जी थे जो उत्तर प्रदेश क्षेत्र के पंडितों को नीचा मानते थे महामहोपाध्याय जी ने शिष्यों के बताने पर मुक्तिराम से व्यासपीठ (गद्दी) से व्याख्यान कराया तथा पं० मुक्तिराम जी को उपाध्याय की पदवी से विभूषित किया। काशीवास के समय ही मुक्तिराम जी के भाई हरदेवा का देहान्त हो गया। पं० जी घर से बिना बताये ही काशी चले गये थे। पं० जी दो वर्ष बाद काशी से घर वापिस लोटे। काशीवास के समय ही उपाध्याय जी को पं० मदन मोहन मालवीय जी ने काशी विद्यापीठ में 500 रुपये प्रतिमास भी नौकरी की पेशकश की थी, किन्तु आप ने उसे ठुकरा दिया।

काशी त्याग— आपके साथी पं० सहजानन्द तथा पं० विष्णुदत्त काशी को छोड गये अत: आप भी काशी से चले आए। पं० विष्णुदत्त रावलपिण्डी (वर्तमान पाकिस्तान) में चोहभक्तां गुरुकुल में गये थे स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उपाध्याय जी भी वहीं (1916) में चले गए।

चोहाभक्तां आप चिकित्सा का कार्य करने लगे। चिकित्सा के द्वारा आपने वहां के हिन्दू, सिक्ख, मुसलमानों की ऐसी सेवा की कि मुसलमान आप को पीर समझने लगे थे, तथा आप के लिये प्राण देने के लिये तैय्यार थे।

योगाभ्यास— उपाध्याय जी प्रतिदिन योगाभ्यास भी करते थे। आप एक बार पर्वत की यात्रा के लिये गये, आपके साथ पं० विद्याधर जी भी वहां से जड-बूटियां उखाडने के लिये गये थे। उसी समय वहां एक सिंह दिखाई दिया। जिसे देखकर पं० विद्याधर जी घबरा गये। तब उपाध्याय ने कहा कि पं० जी घबराओ मत सिंह कुछ नहीं कहेगा तथा सिंह उनके पास से चुपचाप आगे निकल गया। इस प्रकार आपको अहिंसा की सिद्धि प्राप्त की। आप प्रतिदिन कई-कई घंटे योगाभ्यास करते थे।

हैदराबाद— हैदराबाद राज्य में हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार हो रहे थे हिन्दुओं पर तरह तरह के प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे तथा मुसलमानों द्वारा कई हिन्दुओं की हत्यायें की जा रही थी। विवश होकर वहां आर्यसमाज ने 1939 में सत्याग्रह किया था। आप ने भी कुछ लोगों के साथ वहां सत्याग्रह किया तथा जेल काटी। नवाब ने लाचार होकर अपने जन्मदिन के बहाने सभी को मुक्त कर दिया।

संन्यास— आप ने सन्यास लेने के लिये स्वामी सर्वदानन्द जो से स्वीकृति ले ली थी किन्तु

स्वामी सर्वदानन्द जी इस बीच स्वर्ग सिधार गये। तथा आपने उनको गुरु मानते हुए 1943 की वैशाखी के दिन स्वयं ही सन्यास लेकर अपना नाम आत्मानन्द रख लिया।

गुरुकुल का स्थान परिवर्तन— स्वामी दर्शनानन्द जी ने चोहाभक्तां स्थान पर गुरुकुल स्थापित किया था उस स्थान पर गुरुकुल चलाने में होने वाली कठिनाइयों के कारण आप उस गुरुकुल को रावलपिण्डी नगर से कुछ दूर रावल ग्राम में ले आए। आप पहले उक्त गुरुकुल में अध्यापक थे तथा बाद में आप ही वहां के आचार्य बना दिये गये।

आप बडे दूरदर्शी थे तथा आपको पहले से ही अनुमान था कि एक न एक दिन यहां हिन्दू मुस्लिम दंगे होंगे अत: आपने उक्त गुरुकुल की चारदीवारी कई फुट ऊंची तथा मजबूत बनवाई थी।

1947 का देश विभाजन— 1947 में जब देश विभाजन हुआ उस समय हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार हुए। हत्याएं हुई तथा स्त्रियों पर बलात्कार तथा अपहरण हुए। तब स्वामी जी ने वहां के हिन्दू-सिक्ख की रक्षा की तथा सभी लोगों को भारत भेजने के बाद ही स्वयं भारत आए। इसी समय आपने हरयाणा में अपने शिष्य पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती तथा आचार्य भगवान् देव जी (स्वामी ओमानन्द) जी आदि को भी मुसलमानों के विरुद्ध कार्यवाही करने का आदेश दिया। जब हरयाणा में मुसलमान मरने लगे तब पाकिस्तान में भी हिन्दुओं की हत्याएं बन्द हो गई।

साधनाश्रम की स्थापना— पाकिस्तान से आकर आपने यमुनानगर हरयाणा में वैदिक भक्ति साधना श्रम की 35 बीघा जमीन लेकर स्थापना की तथा इसके माध्यम से कार्य करने लगे।

हिन्दी सत्याग्रह— संयुक्त पंजाब के मुख्यमन्त्री सरदार प्रताप सिंह कैरों ने हरयाणा पर पंजाबी भाषा लाद दी। इसके विरोध में आर्यसमाज ने स्वामी जी के नेतृत्व में 10 जून 1957 से हिन्दी सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। जिसमें हजारों लोग जेल गए। सरदार कैरों ने आर्यों पर बडे-बडे अत्याचार किये। शहीद सुमेर सिंह आदि अनेक आर्य इसमें शहीद हुए। अन्त में कैरों सरकार को झुकना पडा तथा 28 दिसम्बर 1957 को सत्याग्रह बन्द हुआ तथा रोहतक में बडे सम्मेलन में विजय दिवस मनाया गया।

रक्तचाप से पीडित— हिन्दी सत्याग्रह में अत्यधिक परिश्रम करने के कारण स्वामी जी को रक्तचाप बहुत बढ गया था। स्वामी जी के तरह-तरह के उपचार किये गये किन्तु अन्त में उपचार तथा सेवा के लिये स्वामी जी को आचार्य भगवान् देव जी के अनुरोध पर गुरुकुल झज्जर लाया गया। (19-10-1960 को)

गुरुकुल झज्जर में पूरा गुरुकुल परिवार उनकी सेवा में उपस्थित रहता था। प्रत्येक व्यक्ति उनकी सेवा करके अपने आप को धन्य समझता था। उन्हें मंहगी से मंहगी दवाइयां दी गई किन्तु उनका रोग बढता ही गया तथा 12 दिसम्बर 1960 के दिन महाराज स्वर्ग सिधार गये। इस खबर को सुनकर सारा आर्य जगत शोक सागर में डूब गया। आर्य समाज के सभी नेता तथा हजारों आर्य लोग गुरुकुल झज्जर में पहुंच गये। लेखक उस समय गुरुकुल झज्जर में ही पढता था। गुरुकुल झज्जर से

ही हजारों लोगों की अगवानी में स्वामी जी के शव को जूलूस के रूप में दिल्ली ले जाया गया। तथा दिल्ली में हजारों लोगों की भीड ने स्वामी जी के मृतदेह के अन्तिम दर्शन किये तथा अन्त में, निगमबोध घाट यमुना पर ले जाकर, वैदिक मन्त्रों के द्वारा दस की मात्रा में घी तथा सामग्री द्वारा स्वामी जी की अन्त्येष्टि की गई। अगले दिन स्वामी जी पर शोकसभा आयोजित की गई।

ऐसे महान् योगी, महाविद्वान् त्यागी तपस्वी स्वामी आत्मानन्द जी को शतशः नमन।

सम्पर्क सूत्र

111/19, आर्य नगर झज्जर, मो—9996227377

आर्यधनपतियों के लिए प्रेरणास्त्रोत उदाहरण

वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु कृतसंकल्प साधु-महात्मा, विद्वान्, आचार्य, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और भजनोपदेशकों के उत्साहवर्धन हेतु वैद्य श्री राव हरिश्चन्द्र जी प्रतिवर्ष उपर्युक्त श्रेणी के सज्जनों को पुरस्कृत करते आ रहे हैं। इस वर्ष उन्होंने अपने ग्राम बीगोपुर (नारनौल) जिला महेन्द्रगढ में आर्य सज्जनों को सम्मानित किया है। आर्यसमाज के धनिक इनसे प्रेरणा पाकर अपने धन का सदुपयोग इस प्रकार भी कर सकते हैं, जिससे आर्यसमाज के प्रचारकों का उत्साह बना रहे तथा भावी पीढी को भी वैदिकधर्म की सेवा करने की प्रेरणा मिलती रहे।

श्रीराव हरिश्चन्द्र जी द्वारा 17 नवम्बर 2018 को सम्मानित किये गये सज्जनों की सूची—

पुरस्कृत होने वाले विद्वान्

आर्य रत्न पुरस्कार

(पुरस्कार राशि एक लाख रुपये प्रत्येक को)

आचार्य अभयदेवजी नैष्ठिक गुरुकुल, खानपुर

आचार्य विरजानन्दजी दैवकरणि, गुरुकुल झज्जर हरियाणा

आर्य विभूषण पुरस्कार

(पुरस्कार राशि पचास हजार रुपये)

डॉ० रघुवीरजी वेदालंकार, सरस्वती विहार दिल्ली

डॉ० देव शर्मा वेदालंकार, द्वारका सैक्टर- 6 दिल्ली

आर्य गौरव पुरस्कार

(पुरस्कार राशि पच्चीस हजार रुपये)

महाशय नन्दराम वैद्य (रेडियो सिंगर), बलाहा, नारनौल

श्री रामरख भजनोपदेशक, गुजरानी भिवानी

श्रीमती उषा आर्या, भजनोपदोशिका, रेवाड़ी हरियाणा

स्थानीय सम्मानित होने वाले भजनोपदेशक प्रत्येक को पांच हजार रुपये राशि के साथ सम्मान पत्र, शाल, नारियल, पगड़ी भी दी गई—

1. महाशय बंशी सिंह, कलवाड़ी, 2. महाशय बेगराज़जी, दताल, 3. जसवंतजी, रेवाड़ी, 4. बुद्धिधरजी कोरियावास, 5. हरिसिंहजी, गादोज, 6. होशियारजी, भालखी, 7. नन्दरामजी, गुलावला 8. विश्वामित्रजी, लूखी, 9. मंगतुरामजी, अटाली की ढाणी, 10. रामावतारजी पुरुषार्थी, बिहाली, 11. महाशय हीरालालजी, दुलोठ अहीर, 12. महाशय भरतसिंहजी, दोगड़ा अहीर।

इस पवित्र कार्य हेतु श्रीराव हरिश्चन्द्र जी बधाई के पात्र हैं तथा वे स्वस्थ रहते हुए दीर्घजीवी हों और भविष्य में भी इसी भांति सेवा करते रहें, यही कामना है। (सुधारक के संवाददाता द्वारा।)

18 नवम्बर 2018 को ऋषि मेले के अवसर पर महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा विद्वानों, वेदस्मरण करने वालों और धर्मोपदेशकों को सम्मानित किया गया

1. डॉ० मुमुक्षु आर्य आर्ष पाठविधि पुरस्कार (11,000 रुपये) — डॉ० सोमदेव शतांशु, हरिद्वार
2. श्री रघुवर सिंह सुधारक वेदोपाध्याय पुरस्कार (21,000 रुपये) — आचार्य विद्यादेव, अजमेर
3. विश्वकीर्ति आर्ययुवा कार्यकर्ता पुरस्कार (11,000 रुपये) — श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु
4. दीपचन्द आर्य धर्मार्थ न्यास पुरस्कार (21,000 रुपये) — आचार्य विजयपाल, गुरुकुल झज्जर
5. स्वामी देवेन्द्रानंद वैदिक धर्म प्रचारक पुरस्कार (51,00 रुपये) — ब्रह्मचारी राजेन्द्र आर्य, फरीदाबाद
6. स्वामी आशुतोष आर्ष अध्यापक पुरस्कार (11,000 रुपये) — ब्रह्मचारी अरुणकुमार आर्यवीर
7. श्रीमती सुमनलता देव आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार (11,000 रुपये) — पंडित रामनिवास गुणग्राहक
8. डॉ० प्रियव्रत दास वेद-वेदांग पुरस्कार (21,000 रुपये) — डॉ० प्रियंवदा वेदभारती
9. श्रीमती कुसुम कृष्ण स्मृति वेदप्रचार सम्मान (21,000 रुपये) — मास्टर रामपाल आर्य, रोहतक
10. श्रीमती कमलादेवी नवाल धर्मपत्नी/श्री मथुराप्रसाद नवाल आर्य विदुषी सम्मान (21,000 रुपये) —आचार्या शीतल
11. श्री मथुराप्रसाद नवल आर्य विद्वत् सम्मान (21,000 रुपये) —आचार्य सत्यप्रिय आर्य
12. श्री बिरदीचंद ईनाणी आर्ष छात्रवृत्ति (21,000 रुपये) — ब्रह्मचारी ज्ञाननिष्ठ
13. श्रीमती सुगीदेवी ईनाणी आर्ष छात्रवृत्ति (21,000 रुपये) — ब्रह्मचारी प्रणव

ऋषि मेला परोपकारिणी सभा, अजमेर

शोक समवेदना

गुरुकुल झज्जर के सबसे पुराने विद्वान् स्नातक आचार्य श्री वेदव्रत जी शास्त्री का 4 दिसम्बर 2018 को अचानक निधन हो गया। श्री शास्त्री जी अनेक वर्ष तक गुरुकुल झज्जर की विद्यार्यसभा के प्रधान तथा मन्त्री पद पर तथा आर्यप्रतिनिधिसभा हरियाणा के मन्त्री रह चुके थे। श्री शास्त्री जी ने 1966 में दयानन्दमठ रोहतक में आचार्य प्रिटिंग प्रेस का संचालन प्रारम्भ किया था जो इनके कुशल प्रबन्धन में आज सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चुका है। इन्होंने अपने प्रेस के द्वारा वेद, वेदांग, संस्कृत साहित्य तथा आर्यसमाज से सम्बद्ध शतश: ग्रन्थों का प्रकाशन करके बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है।

श्री शास्त्री जी अपने पीछे अपने चार सुयोग्य पुत्रों को छोड़ गये है। श्री विनोद कुमार, श्री विजयकुमार, श्री विक्रमसिंह और श्री विवेकानन्द शास्त्री ने सब कार्यभार सम्भाल कर उनको सर्वथा निश्चिन्त किया हुआ था। गुरुकुल झज्जर की ओर से ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत शास्त्री जी के आत्मा को व्यवस्थानुसार सद्गति प्रदान करें तथा शोकसन्तप्त परिवार को इस दारुण दु:ख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करें।

-समस्त गुरुकुल (झज्जरवासी)

आर्यवेदप्रचार यात्रा की चित्रावली

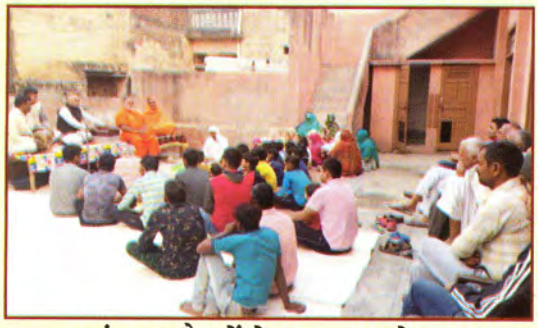

गांव भालौठ में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

गांव मकड़ौली में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भैयापुर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भैयापुर

राजकीय प्राथमिक पाठशाला मकड़ौली खुर्द

गांव बलियाना में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

गांव बोहर में वेद प्रचार करते हुए
आचार्य विजयपाल जी

॥ ओ३म् ॥

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

शिवालिक गुरुकुल

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(गुरुकुल शिक्षा के विस्तारक)

भारतीय संस्कृति के साथ आपके बच्चे का उज्ज्वल भविष्य

सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम (केवल लड़कों के लिए)

प्रवेश सूचना

प्रवेश प्रारम्भ
कक्षा चौथी से चौथी तक
2019-20

"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन किया जा रहा है।

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। यथार्थ ज्ञान के बिना किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थल पर सम्पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो वह राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक शिक्षण संस्थान समूह ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुरक्षा, संस्कार और सेवा इन चार उद्देश्यों को सुनियोजित कर राष्ट्र व छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक गुरुकुल (Shivalik Gurukul) का संचालन किया जा रहा है।

प्राचार्य : शिवालिक गुरुकुल

FEATURES

- Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
- Horse Riding, Skating & Gun Shooting • Separate Coach for Games • Campus in 16 Acres
- Special Focus on Moral Values • Experienced & Dedicated Staff • Lush Green Play Ground.

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana) • **E-mail :** shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 8813061212, 8901140225 • **Website :** www.shivalikgurukul.com

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।